रफ कार्य हेतु स्थान।
SPACE FOR ROUGH WORK

95

लेखन शैली में सुधार करें

स्पष्टता से लेख

प्राप्तांक

प्रश्न (4.5) What measures can be taken for the personal development of children ?
बच्चों के व्यक्तिगत विकास के लिये क्या किया जा सकता है ?

उत्तर : उपर्युक्त प्रकरण में बच्चों के व्यक्तित्व - विकास में मूल्य परक (सामाजिक + राष्ट्रीय मूल्य) शिक्षा की बात की गई है। बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिये निम्नलिखित उपाय हो सकते हैं।

सामाजिक स्तर :- परिवार समाज की भूमिका मानवीय मूल्यों का अनुभव। अतः परिवार में उच्च मानवीय मूल्य, प्रेम, करुणा हो, एक दूसरे के प्रति सम्मान, सहयोग की भावना, करुणा, समन्वय - सहयोग के साथ मैत्री पूर्ण सम्बन्ध, कर्तव्य के प्रति समर्पण हो। सामाजिक व आध्यात्मिक जीवन शैली का अनुकरण, सामाजिक सम्मेलन, समारोह आदि के माध्यम से।

राष्ट्रीय स्तर - राष्ट्र के प्रति प्रेम व समर्पण के लिए राष्ट्रीय समारोह यथा स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि में भागीदारी के माध्यम से, स्वच्छता अभियान, साथ ही राष्ट्रीय कार्यक्रमों, देशभक्ति का विकास जैसे कार्यक्रम के साथ - बच्चों में तीनों स्तरों पर यथा - पंचायत स्तर, जिला स्तर, आवासीय एवं न्यायालय स्तर पर, मूल्य परक शिक्षा के माध्यम से नैतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का विकास सुनिश्चित किया जा सकता है।

प्राप्तांक

प्रश्न (4.4) Mention the major components related to personality development.
व्यक्तित्व विकास से संबंधित प्रमुख अवयवों को उल्लेखित करें।

उत्तर उपर्युक्त प्रकरण में शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्तित्व विकास को माना गया है और व्यक्तित्व विकास के लिए सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्यों के समावेश की चर्चा की गई है। प्रमुख सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य हैं-

1. उत्तरदायित्व - कार्य, व्यवहार में उत्तम चरित्र
2. ईमानदारी - स्वयं एवं समाज के प्रति।
3. प्रेम - लोगों में भाईचारा - सद्भाव हेतु।
4. करुणा - जीव जगत के प्रति करुणा हो।
5. सहृदयता - सब के मध्य सौहार्द हो।

इन सामाजिक मूल्यों के अतिरिक्त राष्ट्रीय मूल्य

1. सत्य निष्ठा - कार्यों एवं सिद्धांतों में एकरूपता हो
2. नेतृत्व क्षमता - आगे बढ़कर कार्य करने की सामर्थ्य
3. संवेगात्मक बुद्धि - भावनाओं का प्रबंधन एवं नियंत्रण
4. लोक कल्याण - जन कल्याण की भावना हो
5. समानुभूति - लोगों के सुख : दुःख को समझ
6. कर्तव्य परायणता एवं कर्तव्य बोध का ज्ञान।।

इन मूल्यों के अतिरिक्त वे सभी गुण जो समाज एवं राष्ट्र के एकीकरण एवं शांति स्थापित करने में सहायक हों, व्यक्तित्व विकास में

प्राप्तांक

प्रश्न (4.3) Education should not be a medium of employment, in this context, submit your views.
शिक्षा सिर्फ रोजगार का माध्यम ना बनकर रह जाये, इस सन्दर्भ मे अपना विचार प्रस्तुत करे।

उत्तर : प्रस्तुत प्रकरण में स्पष्ट परिलक्षित है कि ब्रिटिशों ने शिक्षा को रोजगार पाने का एक साधन मात्र बना दिया, जिसमें सिर्फ आर्थिक हित समाहित हो। उसमें केवल उपभोक्तावादी, पूंजीवादी संस्कृति का विकास होगा। जबकि भारतीय संविधान लोक कल्याणकारी राज्य को अंगीकृत किये हुए है। प्रस्तावना में राजनैतिक, सामाजिक के साथ आर्थिक न्याय की व्यवस्था का लक्ष्य निहित है साथ ही व्यक्ति के अधिकार कर्तव्यों का उल्लेख है। अतः शिक्षा के माध्यम से सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास सुनिश्चित करना अपरिहार्य है।

मूल्य विहीन शिक्षा व्यक्तित्व के विकास में अवरोध पैदा करती है। उसमें व्यक्ति की स्वेच्छाचारिता एवं स्वच्छंदता बढ़ती है। जो किसी न किसी रूप में समाज व राष्ट्र के प्रति संकट उत्पन्न करता है। देश और समाज में बढ़ते अपराध! बलात्कार, नक्सली, आदि, साम्प्रदायिक हिंसा, मॉब लिंचिंग, मूल्य विहीन शिक्षा की देन है। जो पाश्चात्य प्रवृत्ति का परिचायक है।

निष्कर्षतः प्रकरण में व्यक्तित्व के विकास में नैतिक एवं सामाजिक मूल्य युक्त शिक्षा पद्धति के समावेश की बात की गई है, जो सर्वहित में है।

प्राप्तांक

प्रश्न (4.2) What are the benefits of value added education ?
मूल्य परक शिक्षा के क्या-क्या लाभ है ?

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण में यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा के व्यावसायीकरण में केवल व्यक्ति के आर्थिक पक्ष (रोजगार) पर बल दिया गया है, जबकि शिक्षा का मूल लक्ष्य सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का समावेश व्यक्तित्व में सन्निहित हो। मूल्य परक शिक्षा के लाभ –

1. नैतिकता – नैतिकता के विकास से समाज व देश में नियम और कानून का पालन आसानी से होता है।
2. राष्ट्रहित – उच्च मूल्यों एवं आदर्श युक्त व्यक्ति स्वहित के स्थान पर राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं।
3. तीव्र आर्थिक विकास – मूल्य के अनुपालन से सब एक साथ राष्ट्रीय विकास में सहभागी होकर कार्य करेंगे।
4. सामाजिक शांति एवं सुरक्षा को बल मिलता है।
5. कानून एवं व्यवस्था नियंत्रण में अतिरिक्त खर्च कम होगा।
6. कार्य कुशलता एवं कर्तव्य परायणता में अभिवृद्धि होती है।
7. सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्वों के निर्वहन में आसानी होती है।
8. भ्रष्टाचार एवं कालाबाजारी पर नियंत्रण हो जाता है।

अंततः मूल्य परक शिक्षा के माध्यम से व्यक्तिगत उन्नति के साथ साथ सामाजिक व राष्ट्रीय उन्नति के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।



3½

प्रश्न (4.1) What is the reason for commercialization of education ?

शिक्षा के व्यवसायीकरण के क्या कारण हैं ?

उत्तर : "आये थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास" उपर्युक्त कथन में इसी तथ्य की ओर संकेत है। शिक्षा अपने मूल उद्देश्यों से हटकर गौण हो गई। बच्चों के व्यक्तित्व विकास में सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का समावेश करना था, किंतु वाणिज्यीकरण के उपरांत शिक्षा एक रोजगार पाने का माध्यम बन कर रह गई।

शिक्षा के व्यवसायीकरण के प्रमुख कारण निम्नवत है

1 शिक्षा में प्रतिस्पर्धा का विकास करना, जिससे शिक्षा के लिए बेहतर विकल्प व अवसर सुलभ हों।

2 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना जिससे उच्च शैक्षणिक मानदंड स्थापित हो सके।

3 सामाजिक तथा आर्थिक विकास में शिक्षा को सहायक बनाकर राष्ट्रीय प्रगति एवं उन्नति को गति देना।

4. माँग आधारित नवीन पाठ्यक्रम का सृजन करना

5 शिक्षा की पहुँच को जन जन तक, सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचाना। वंचित समूहों को शिक्षा से जोड़ना।

6 राष्ट्रीय एकीकरण एवं बेहतर प्रशिक्षित एवं कौशल युक्त मानव संसाधन का विकास करना।

निष्कर्षतः जन सरोकारी एवं समावेशी शिक्षा प्रणाली का विकास व्यापक व्यवसायीकरण से ही संभव है।

32

नोट - प्रश्न क्रमांक (3) तथा (4) प्रकरण अध्ययन पर आधारित है। प्रश्नों पर अंकों का वितरण क्रमशः प्रश्न क्रमांक (3)+(4)= अंक (30+35)=65

Note: Question No. (3) and (4) are based on case studies. Distribution of marks on questions respectively question no. (3) (4) Marks (30+35)=65

प्राप्तांक

प्रश्न (4) **In the present scenario, if government schools are left out, almost education has been commercialized. Today education is only a means of getting employment. The basic value of education is the development of personality, but the sad aspect is that the development of personality itself has been commercialized. Social and national values are not included in the personality development of the child.**

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि सरकारी विद्यालयों को छोड़ दिया जाये जहाँ लगभग शिक्षा का व्यावसायीकरण हो चुका है। जो शिक्षा केवल रोजगार पाने का एक साधन मात्र है। शिक्षा का बुनियादी मूल्य व्यक्तित्व का विकास है लेकिन दुःखद पहलू यह है कि व्यक्तित्व के विकास का ही व्यवसायीकरण हो गया है। बच्चे के व्यक्तित्व विकास में सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का समावेश नहीं किया जाता है।

1. शादी के महत्व एवं दायित्व पर चर्चा – चूँकि शादी एक सामाजिक एवं धार्मिक अनुष्ठान है, जो अपने साथ कई कर्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वाह करती है। अतः अल्प विकसित अवस्था में इन उद्देश्यों की पूर्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। इसमें न सिर्फ शिक्षा के अधिकार से बल्कि व्यक्तित्व विकास से वंचित होगा।

2. सामाजिक कुप्रथा को मिटाने तथा स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए इन्हें जागरूक करेंगे। सामाजिक कुप्रथाओं की इनकी बुराइयों के बारे में सम्पूर्ण की जानकारी दें।

3. शादी की या समाज के विकास में ज्यादा जीवन के महत्व को स्पष्टता प्रदान करेंगे। क्योंकि बालिका या समाज के लिए जिन्दगी दाँव पर लगाना उचित है।

4. अल्प वयस्क में शादी करने से उनकी शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं से अवगत करायेंगे।

5. चूँकि आर्थिक स्थिति भी प्रभावित हो रहा है। शादी करने में व्यापक तौर पर आर्थिक हानि की बर्बादी होती है। अतः शादी के लिए कन्यादान योजना, जैसे कार्यक्रमों में सहायता का प्रयास करेंगे।

6. साथ ही सरकार की नीतियों एवं कानूनों से अवगत करायेंगे। तथा दण्ड सम्बन्धी प्रावधानों का उल्लेख देंगे। निश्चय ही इन कर्तव्यों का पालन आवश्यक है। निष्कर्ष रूप में इन कर्तव्यों के माध्यम से मित्र के साथ-साथ उपस्थित सदस्यों एवं आदिवासियों को शीतलता एवं कांति मान लाभ होगा।

प्राप्तांक

प्रश्न (3.3) What is your duty as a friend?
एक मित्र होने के नाते आपका क्या कर्तव्य है ?

उत्तर : "जे न मित्र दुख होहिं दुखारी।
तिन्हहि बिलोकत पातक भारी॥"

उपर्युक्त प्रकरण में 'राम चरित मानस' की यह चौपाई एक दम उपयुक्त नजर आती है। प्रकरण सच्चे मित्र की महत्ता और उसकी 'भूमिका' का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है।

चूंकि उपर्युक्त प्रकरण में शादी का समारोह एक 'नाबालिग यार' के घर है। परिजन मेरा आदर-सत्कार भी करते हैं, और मेरा स्वागत भी महसूस करते हैं। बचपन का मित्र होने के नाते मैं उसकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति से भली भांति परिचित हूं। सामाजिक दबाव एवं 'कुप्रथा' के साथ कमजोर आर्थिक स्थिति उन्हें जानबूझकर न चाहते हुए अल्प वयस्क अवस्था में शादी के लिए मजबूर कर रही है। चूंकि मैं एक जिम्मेदार प्रशासनिक अधिकारी के साथ साथ रमेश का मित्र भी हूं, ऐसे में मुझे सकारात्मक एवं प्रभावी कदम उठाने की पूर्ण आजादी है। एक मित्र के नाते मेरे निम्न लिखित कर्तव्य होंगे-

यह विकल्प सही प्रतीत लगता है

सामाजिक कुरीति में यह सिर्फ नियम न तोड़े बल्कि [illegible] दोनों [illegible] और [illegible] बनेगी। [illegible] समाज में [illegible] [illegible] सामाजिक कुरीतियों [illegible] [illegible] [illegible] को [illegible] किये [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] को [illegible] करता है। यह [illegible] सामाजिक [illegible] अपराध है।

अतः विकल्प [illegible]।

विकल्प 3 — विकल्प (3) आपसी एवं समस्त पक्षों की सहमति करना है। जो निश्चित ही इस केस को [illegible] न सिर्फ [illegible] अपितु सामाजिक कुरीतियों के [illegible] की सुरक्षा [illegible] सहायक होगा।

[illegible] शादी एक [illegible], [illegible] आदि के बाद है, [illegible] से अनुरूप - विधि, के साथ साथ सामाजिक [illegible] कर्मों का वहन है। चूंकि शादी [illegible] के लिए भी [illegible] है। अतः [illegible] वादी और भी [illegible] है [illegible] कुछ अपराध का [illegible] लिया जाये तथा सामाजिक प्रथा को [illegible] कर समाप्त किया जाये।

अतः विकल्प (3) सर्वोत्तम है, उपयुक्त है।

निष्कर्षतः उपयुक्त प्रकरण के आलोक से निष्पक्षता के माध्यम से मैं अपने नैतिक सामाजिक एवं [illegible] दायित्वों का निर्वहन कर सकता हूँ।

प्रश्न (3.2) [illegible]

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण में एक प्रशासनिक अधिकारी के नाते निम्न लिखित विकल्प उपलब्ध होंगे :-

विकल्प —
1. शादी में सम्मिलित न होना।
2. अपनी भावनाओं को दबाकर शादी जाना।
3. प्रशासनिक प्रभावी कदम उठाना।

विकल्प 1 - शादी में सम्मिलित न होना

उपर्युक्त प्रकरण की मौजूदा परिस्थिति में यह विकल्प प्रथम दृष्टया उपयुक्त नजर आता है। इसमें मैं स्वयं आप को शादी से अलग रख सकता हूँ। साथ ही मित्र की बहन के शादी [illegible] से अपराध [illegible] करने से मुक्त रहूँगा। किंतु मेरे (एक अधिकारी) लिए उपयुक्त नहीं होगा। क्योंकि इससे मैं अपने सामाजिक एवं प्रशासनिक दायित्व से विमुख हो कर सामाजिक बुराई को बढ़ावा देने का कार्य ही करूँगा। इस कदम से मैं अपराध [illegible] की भावना से जीवन पर प्रश्न हो सकता हूँ। अतः विकल्प 1 अनुचित है।

विकल्प 2 यह विकल्प अनुचित कहा है कि शादी में अपनी भावना दबाकर शादी [illegible] कराना

जीवन के विभिन्न आयामों में पुन उभर पड़ेगा। प्रेम की इसके व्यक्तित्व विकास और क्षमता पर भी नकारात्मक असर पड़ेगा। अतः निर्णय भार मिश्रा में न केवल व्यक्तिगत आयामों का न की बल्कि नैतिक शक्तियों का कुशल युक्त निर्णय करने की कन्याशक्ति मानसिक, शारीरिक प्रताड़ना, आत्म हत्या, आदि समस्याओं का भविष्य में सामना करना पड़ सकता है।

- आध्यात्मिक मूल्य : चूंकि शादी एक आध्यात्मिक बन्धन है। प्रत्येक माता पिता सुयोग्य वर ढूंढकर कन्या दान करते हैं जिसे सामाजिक भी प्रतिष्ठा के साथ अन्य वयस्क अवस्था में शादी एक कुप्रथा है उसे समाप्त करना सामान्य व नागरिक का दायित्व है। यह भी मूल्य संघर्ष की स्थिति

प्रशासनिक मूल्य : चूंकि प्रकरण में अन्य लोक लड़की को शादी को जा रही है, जो कि कानूनी रूप से अपराध है। प्रकरण यह भी स्पष्ट करता है कि मूल्य एक दिन पूर्व खबर मिल गई हो। यदि मैं कुछ सख्त कदम नहीं उठा पाया तो मेरे सत्यनिष्ठा, कर्तव्य परायणता, संवेदनशीलता जैसे मूल्य संघर्ष में होंगे। साथ ही प्रशासनिक अधिकारी ने कई बार में प्रशासनिक उत्तरदायित्व एवं जवाबदेह नहीं। को भावों में मुक्त नहीं हो पाऊँगा। इन मूल्यों का एकमात्र संघर्ष प्रतीत होता है।



5

परीक्षक

प्रश्न (3.1) What values are struggling in the episode.
प्रकरण में कौन –कौन मूल्य संघर्षरत है।

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण "स्वाति एक बूँद : गुणातीत" का मानुषी उदाहरण है।
एक प्रशासनिक अधिकारी को उनकी कार्यों निष्ठा का कर्तव्य-पथ करना है।
चूंकि प्रस्तुत प्रकरण में उल्लेखित है कि शादी का कार्यक्रम बचपन के मित्र रमेश के बहन की.
प्रकरण यह भी उल्लेखित करता है कि अधिक उम्र में शादी एक मान्य प्रथा है। साथ ही कानून में निर्दिष्ट है कि लड़की 18 वर्ष से कम उम्र की है। इसके अतिरिक्त प्रकरण में शादी के एक दिन पूर्व की खबर मिलती है।
उपर्युक्त प्रकरण में निम्नलिखित मूल्य संघर्ष हैं

संघर्षरत मूल्य

नैतिक मूल्य → [संघर्षरत मूल्य] ↔ प्रशासनिक मूल्य

↓

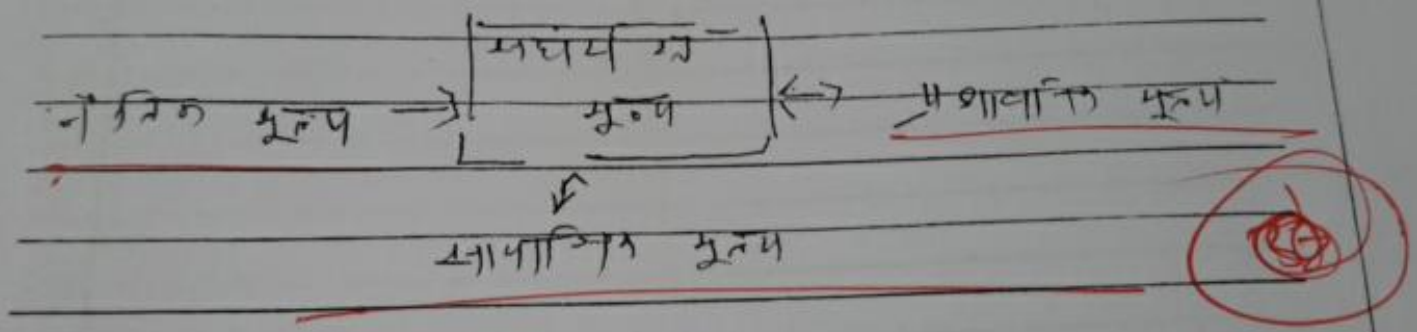

सामाजिक मूल्य

नैतिक मूल्य :- चूंकि प्रकरण में एक बाल वधू लड़की की शादी को रोकना है। रोकने से न केवल उसकी शारीरिक, मानसिक आदि.

नोट – प्रश्न क्रमांक (3) तथा (4) प्रकरण अध्ययन पर आधारित है। प्रश्नों पर अंकों का वितरण [illegible] प्रश्न क्रमांक (3)+(4) = अंक (30+35)=65

Note: Question No. (3) and (4) are based on case studies. Distribution of marks on question [illegible] respectively question no. (3)+(4)= Marks (30+35)=65

प्रश्न (3.1) You are SDM, your childhood friend Ramesh's sister is going to get married, you have been invited to the wedding, when you reach there, you come to know that the girl is under 18 and you get to know this the day before the wedding and it is a recognized practice in that society. In that society, marriage is judged with respect, and your friend's financial situation is also not right. In this way you have-

आप एक एस.डी.एम. हैं, आपके बचपन के मित्र रमेश की बहन की शादी है, आपको शादी में बुलाया गया है जब आप वहाँ पहुँचते हो, आपको पता चलता है, कि लड़की की उम्र 18 वर्ष से कम और आपको यह पता शादी के एक दिन पहले ही पता चला, तथा उस समाज में यह मान्यता प्रथा है। उस समाज में शादी को मान–सम्मान से आँका जाता है, साथ ही आपके मित्र की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं है।

ऐसे आपके पास–

प्रश्न 2 Question 2 Write the answers of any 15 of the following questions in maximum 150 words. Each question carries 6 marks 6x10=60

प्रश्न (2.18) Continued (जारी) Q./M - 06

परीक्षक

हैं। मैसाफी तक कलाएँ पहुँच जाती।

• पुरस्कार एवं इनाम – उत्साहवर्धन एवं गलती में हानि करने में कार्य की हानि देकर उनमें नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

दण्ड का विधान – गलत के मन में दुष्कार्य की भावना कम होगी, एवं नैतिक मूल्यों की अनुपालना हो जाती है। यह भय दिखाकर नीति का उदाहरण है।

अन्य प्रयत्न – लोक सेवा में नैतिक मूल्यों के विकास के लिए संस्थागत स्तर पर उपयुक्त कार्यों को चरणबद्ध किया जा सकता है।

• प्रशासनिक स्तर पर आवश्यकतानुसार नियम, नीति एवं संहिता के निर्माण में नैतिक मूल्यों का निर्माण किया जा सकता है।

• कार्यान्वयन के स्तर पर प्रभावी शासनकर्ता एवं दृढ़ इच्छा शक्ति से नैतिक मूल्यों का समर्थन किया जा सकता है।

उपरोक्त आयामों के साथ साथ नैतिक आदर्श कर्तव्य संबंधों की वर्षा में नैतिक मूल्यों की भूमिका अहम होती है। कार्य की दक्षता एवं सर्वोत्तम की उत्पादकता हेतु नैतिक मूल्य आधारित कार्य है।

5

प्रश्न (2.14) Measures to develop moral values in public servants ?
लोक सेवकों में नैतिक मूल्यों को विकसित करने के उपाय ?

उत्तर: लोक सेवाओं के प्रभावी एवं कर्तव्य पूर्ण निर्वहन में नैतिक मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लोक सेवकों में नैतिक मूल्यों के विकास के लिए निम्नांकित उपाय कारगर हो सकते हैं :-

- आचरण संहिता (उपाय) — विधि - नियम
- संविधान का पालन ↓ पुरस्कार - सम्मान
- जवाब देहिता उत्तरदायित्व
- दण्ड विधान

आचरण संहिता — नीति नियमों का एक समूह जो लोक सेवकों का मार्गदर्शन एवं नियंत्रण करने में सहायक होती है।

संविधान — भारत का संविधान, देश की सर्वोच्च विधि है जो शासन के उद्देश्य व लक्ष्य का निर्धारण व मार्गदर्शन करती है।

- जवाब देहिता एवं उत्तर दायित्व — इनके माध्यम से कार्य निष्पादन में शुचिता तथा विवेकाधीन शक्तियों के दुरुपयोग पर रोक लगेगी।
- तत्परता एवं पारदर्शिता — इनके माध्यम से [illegible] शासन के प्रति विश्वास और सेवाओं की गुणवत्[illegible]

आशय UNCAC को आशय है जो वर्ष 2003 में संयुक्त राष्ट्र महासचिव के द्वारा अंगीकृत/प्रस्तुत किया।

उद्देश्य - भ्रष्टाचार की रोकथाम हेतु कुशल एवं प्रभावी उपाय करना।
• भ्रष्टाचार को रोकने में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाना।
• सम्बन्धित देशों को लूटी की सम्पत्ति वापस लाने में मदद।
• सत्यनिष्ठा, जवाबदेही, पारदर्शिता एवं उचित प्रबंधन को बढ़ावा देना।

प्रमुख प्रावधान - पांच क्षेत्रों को शामिल किया गया
1. निवारक उपाय
4. सम्पत्ति की वसूली
2. अपराधीकरण
(5)
5. सूचना का विनिमय
अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग।

भ्रष्टाचार के विभिन्न प्रकारों को शामिल किया गया है जैसे रिश्वतखोरी, कार्यों का दुरुपयोग, निजी क्षेत्र का भ्रष्टाचार, व्यापार को प्रभावित करना आदि।
• भ्रष्ट साधनों से अर्जित सम्पत्ति की वसूली कर उसके स्वामित्व धारकों को देना।

निष्कर्ष: UNCAC भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने में वैश्विक सहयोग को बढ़ाकर देकर इसकी रोकथाम को प्रभावी करने में सहायक है।

4

प्रश्न (2.13) Manifesto against corruption by U.N.O. / भ्रष्टाचार के विरुद्ध U.N.O. घोषणा पत्र ?

उत्तर: महात्मा गांधी जी ने 'सिद्धांत विहीन' राजनीति को एक पाप माना है। सिद्धांत विहीन राजनीति भ्रष्टाचार को जन्म देती है। भ्रष्टाचार नियंत्रण के सन्दर्भ में 'UNO' का महत्वपूर्ण कदम माना गया है।

UNCAC अर्थात भ्रष्टाचार के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र का अभिसमय — भ्रष्टाचार तत्कालीन संयुक्त राष्ट्र के महासचिव कोफी अन्नान के अथक प्रयास से लाया गया जिसके अन्तर्गत भ्रष्टाचार के विरोध में अन्तर्राष्ट्रीय सहमति बनी। इसमें 140 देश शामिल थे। वर्तमान में 187 देश शामिल हैं।

• प्रारूप निर्माण — UNCAC — हस्ताक्षर — 9 दिसम्बर 2003

31 अक्टूबर 2003

• अध्याय 8

प्रभावी — 14 दिसम्बर 2005

अनुच्छेद — '71'

• भारत (CCPP) वर्ष 2006 — 'ओईए' में किया।

• वर्तमान समीक्षा चक्र 2019 — अफ्रीकी समीक्षा हुई।

आधार – मंत्री ने निष्पक्ष निर्णय में कमजोरी
• संतुलन, एवं, वस्तुनिष्ठता की सुनिश्चित करती है।
• तर्क की बाधा उत्पन्न कर को कमजोर करती है और न पक्षपात की ओर ईमानदारी की प्रेरित करती है।

महत्व – भावनात्मक बुद्धि की भूमिका इस बात से है
इसके माध्यम से मानवीय संबंध स्थापित और बेहतर बनाये जा सकते हैं।
• साथ ही जीवन में कुछ चुनौतियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर समस्याओं के समाधान में मदद मिलती है।

अन्य लाभ : प्रशासनिक कार्य उत्पादकता में वृद्धि।
• समन्वय एवं सामंजस्य स्थापित करने में सहायक।
• असहमति की स्थिति का सकारात्मक निष्कर्ष तक लाने में भावनात्मक बुद्धि का महत्व बढ़ जाएगा।

निष्कर्ष – भावनात्मक बुद्धि का विकास प्रशिक्षण, प्रशिक्षण के साथ साथ तार्किकता एवं नैतिकता के आधार पर किया जा सकता है।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि भावनात्मक बुद्धि कर्तव्य, प्रशासनिक संवादों को तनाव प्रबंधन व कर्तव्य में सकारात्मक भूमिका निभाती है।

भावनात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति का अपने तथा दूसरों के भावों को समझना, उन पर नियंत्रण करना और उनका सर्वोत्तम उपयोग करना है। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु दूसरों से व्यवहार करते समय, व्यक्ति भावनात्मक बुद्धि दूसरों के संवेगों तथा भावनाओं को नियंत्रित करती है ताकि शांति और सामंजस्य बनाया जा सके।

अमेरिकी मनोविज्ञानी तथा लेखक डेनियल गोलमैन ने अपनी पुस्तक Emotional Intelligence Why it can matter more than IQ में भावनात्मक बुद्धि के महत्व की व्याख्या प्रस्तुत की है।

लोक - प्रशासन के अंदर भावनात्मक बौद्धिकता संबंधी जैसे

- प्रत्येक कर्मचारी की मनोवृत्ति एवं क्षमता के पूर्ण उपयोग में सहायक।
- निरंतर कार्य के लिये अभिप्रेरणा एवं आशावादी दृष्टिकोण बनाए रखने में सहायक।
- नेतृत्व क्षमता के विकास एवं मजबूती प्रदान में सहायक।
- सांस्कृतिक बहुलता के प्रति सकारात्मक मानसिकता के सृजन में मददगार।

व्यवहार की आक्रामकता कम करने, एवं मनोवृत्ति बदलने में स

4½

प्रश्न (2.11) Continued (जारी)

- उपजाऊ भूमि : जिन प्रदेशों की भूमि उपजाऊ होती है वहां आप ज्यादा [illegible] नहीं इसके विपरीत परिस्थितियों में [illegible] प्रथा पायी जाती है।
- दुर्गम क्षेत्र : पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में पाया जाता है। क्योंकि वे कठिन संघर्ष करते हैं।
- अन्य समाज से अन्तःक्रिया : जिन आदिवासी समाजों में उसके कम होता है अपेक्षाकृत अधिक पायी जाती है। इसके विपरीत ग्रामीण समाजों के मूल्यों में गति बनाता दिखता है।
- जाति / [illegible] : विभिन्न समाजों में जाति भी मूल्यों के निर्धारण में अहम भूमिका निभाती है। जातियों में विभिन्न मान्यताएं जैसे जीवन प्रकाश, [illegible] पान, जीवन प्रकाश आदि।

लिंगानुपात : जहां समान लिंगानुपात है वहां एक पत्नी विवाह का प्रचलन है, जबकि अन्यथा स्थितियों में बहु-पत्नी / बहुपति विवाह नजर आते हैं। जैसे - उदाहरण बहुपति विवाह (आदिवासी समाज)

- जीवन प्रत्याशा : व्यक्तियों की [illegible] के साथ [illegible] उत्तरदायित्व मुख्य भूमिका, [illegible] में [illegible]

निष्कर्ष : इस ये नैतिक मूल्य सतत नहीं बल्कि गतिशील एवं परिवर्तनशील हैं। सामाजिक व्यवस्था के प्रबंधन एवं क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण हैं।

4

प्रश्न (2.11) Dimensions of moral values?
नैतिक मूल्यों के आयाम ?

उत्तर: नैतिक मूल्य से आशय उन मानवीय मूल्यों से है - जो मनुष्य के व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं। जैसे सदाचार, प्रेम, करुणा आदि। नैतिक आदर्श, नैतिक मूल्यों का आधार होते हैं। नैतिक आदर्श वे हैं जिन्हें व्यवहार करने के लिए नैतिक नियम बनाये जाते हैं।

नैतिक मूल्यों का विकास समाज के अन्दर होता है, जिसके निर्धारण एवं विकास में अनेक आयामों की भूमिका होती है।

निर्धारक तत्व जैसे - भौगोलिक परिस्थितियाँ, सामाजिक अन्तःक्रिया, नागरिकी, सांस्कृतिक सापेक्षता, अर्थव्यवस्था आदि।

भौगोलिक परिस्थितियाँ - किसी प्रदेश विशेष की भौगोलिक परिस्थितियाँ वहाँ विभिन्न मूल्यों के निर्माण में महती भूमिका निभाती हैं। जैसे ठण्डा - जैसे अन्य देशों में प्रायः धूल भरी आंधियाँ काफी रहती हैं, जिससे बचने के लिए वहाँ महिलाएं प्रायः बुर्का पहनती हैं, तथा पुरुष ज्यादा वस्त्र पहनते हैं। क्योंकि उष्ण कटिबंधीय प्रदेशों के लोग वहीं [illegible] कम वस्त्र पहनते हैं। स्वागत में मद्य का प्रयोग करते हैं। यूरोप में भी [illegible] जाता है।

निम्नलिखित में से किन्हीं 15 प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 150 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 (छः) अंकों का है।
Write the answers of any 15 of the following questions in maximum 150 words. Each question carries 6 (Six) marks.

प्रश्न (2.10) Continued (जारी) 6x10=60

आज मानव विज्ञान चन्द्रलोक
जिसकी कल्पना तुलसीदास के मुख से पुलक भी गया है।
• तुलसी का मानना था कि मानव मन में भी
प्रति तक होना चाहिए कि जनता की प्रजा के प्रति
• "जासु राज प्रिय प्रजा
नरक अधिकारी॥" दुखारी। सो नृप अवसि
का मुख्य तत्व नहीं। भाग भरहिं भक्ति भावना -
हेतु व उत्तर वाक्य) में भी
सब कालीन समाजों सब समाजों की सबसे उत्तम
जब जब होहि धरम की हानि।
बाढ़हिं अधम, असुर अभिमानी
तब तब प्रभु धरि विविध सरीर
हरहिं सकल भव के पीरा॥"
साथ ही निर्गुण - सगुण के मध्य समन्वय कर अगुने
'अगुनहि सगुनहि नहिं कछु भेदा।
गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा॥'
साथ ही शैव व वैष्णव के मध्य को मिटाते हुए शिव और राम को एक दूसरे का भक्त बताया।
तत्कालीन लोगों में भाग्य और पुरुषार्थ, भोग व त्याग के मध्य समन्वय स्थापित किया।
समग्र: तुलसीदास समन्वय की चेष्टा करने वाले विराट कवि हैं। उनको इस समन्वय वाला ने महत्वकाला के विध्वस्त हुए समाज को बचाने का कार्य किया। तथा भविष्य के लिये समाज दर्शन का कार्य किया।
—॥—

4

(2.10) Tulsidas's philosophy ...

उत्तर- गोस्वामी तुलसीदास जो भक्ति काल के सर्व-
श्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। इनकी काव्य एवं
इनका दृष्टिकोण आज भी उतना ही प्रासंगिक है
जितना कि तत्कालीन समय में था।
तुलसी की प्रासंगिकता का एक मुख्य कारण उन
समस्याओं की निरंतरता है, जो 'कलियुग' में
उन्होंने [illegible] थी, आज भी प्रासंगिक है।
इन समस्याओं से निपटने हेतु
तुलसी ने, तत्कालीन समस्याओं के [illegible]
राम राज्य की कल्पना की। राम राज्य का वर्णन
करते हुए उन्होंने लिखा:
"धरम निरत नर नारि।
राम राज [illegible] [illegible] पावहि पाहि॥
जाग न [illegible] न [illegible] दुख, [illegible]"
राम राज्य का मुख्य आधार एक लोक कल्याणकारी
राज्य है जो लोगों को आधारभूत बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध
करने का भाव ही प्रकट हो रहा है।
एक आदर्श समाज। राज्य के लिए लोगों के
स्वास्थ्य समृद्धि की कामना व्यक्त करते हुए लिखा-
"अल्प मृत्यु नहिं, कवनिउ पीरा।
सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।
नहिं कोउ अबुध, न लच्छन हीना॥"

प्रश्न (2 B) Continued (जारी)

पूर्वाग्रह एवं विरोध को अल्प तम करने के उपाय -

उपाय → संज्ञानात्मक
→ भावनात्मक
→ व्यावहारिक

संज्ञानात्मक स्तर के माध्यम से चिन्तन कर, तथ्यों की जाँच करना। तथ्यों की निष्पक्षता की जाँच उपरान्त निष्कर्ष का निर्माण करना। तथ्यों एवं व्यापक आंकड़ों के विश्लेषण एवं वैज्ञानिक तर्कों में शामिल करना आदि। पूर्व धारणा को त्याग

भावनात्मक स्तर पर लोगों में मानवीय मूल्य एवं सामाजिक गुणों का विकास करना। लोगों की अन्य प्रवृत्तियों का विरोध करना। सामाजिक सद्भाव बनाना।

व्यावहारिक स्तर पर न्यायोचित नीतियों एवं नियमों का प्रभावी क्रियान्वयन करना। साथ ही सामाजिक संगठनों द्वारा प्रचार प्रसार करना। साथ ही जन जागरण जन संचार को बढ़ावा आदि।

अन्य प्रयास - शिक्षा में वैज्ञानिकता को बढ़ावा आदि।
सतत एवं सकारात्मक निरीक्षण आदि।

उपर्युक्त उपायों के माध्यम से उन भावना को अल्प तम कर लोकतांत्रिक लक्ष्यों की प्राप्ति संभव होगी।

—॥—

4

[illegible] प्रबंध [illegible]
[illegible]
[illegible] किया जा सके।
[illegible]

नैतिक [illegible] का व्यापार [illegible] पूर्ण [illegible], कानूनी आवश्यकताओं, योजनाओं एवं नीतियों, कार्यक्रमों में [illegible]। उदाहरण - [illegible], आदि।

∴ कुशलता एवं विवेक से [illegible] निश्चय है।

- समय और अवसर को कम करती है।
- व्यापार में [illegible] प्रति [illegible] बनाती है।
- न्यूनतम लागतों का अधिकतम लाभ करती है।
- उत्पादकता की वृद्धि में सहायक।

इसके साथ ही नैतिक [illegible] मूल्यों को [illegible] करती
इन दोनों को अल्पतम करने के प्रयास जरूरी है।

Write the answers of any 15 of the following questions in maximum 150 words.

Q (2 a) Continued (जारी)

अर्जित (जन्म जात) या प्रशिक्षण द्वारा निर्मित्त कौशल का भाग, प्रशिक्षण द्वारा विकसित कौशल के विकास हेतु निम्न निम्नित :

- किसी विशेष क्षेत्र में परिणामों में सफलता करने में आवश्यक। प्रयोजन अनुभव
- जटिल वातावरण में अनुचित कार्य करना प्राप्त करने में मददगार आदि।

कार्य क्षमता एवं [illegible] कर निम्नलिखित लाभ होते हैं -

- कार्य को दूरदर्शी एवं निष्पक्ष तरीके से सम्पन्न करने में उपयुक्त।
- क्षमता की वास्तविक स्थिति का पता लगाने में, कार्य के भावी परिणामों को समझना आसान।
- कुशल अभि क्षमता से कार्य विभाजन एवं समन्वय व नियंत्रण स्थापित करना आसान होता है।

अन्य लाभ : कार्य करने की मजबूत प्रवृत्ति।

- लोगों के साथ प्रभावशाली सामंजस्य स्थापित करना
- व्यावहारिक संसाधनों का उपयोग करने की क्षमता।

उपर्युक्त विशेषताओं के होने पर प्रभावकारी अभि-क्षमता किसी व्यक्ति में होती है। अभि क्षमता प्रशासकों में त्वरित निर्णय, नेतृत्व, दृढ़ इच्छाशक्ति एवं सांवेगिक गुणों का विकास कर आत्म निष्पक्षता, एवं सांवेगिक गुणों का विकास कर को लोक कल्याण कारी बनाता है।

4

प्रश्न (2.6) What is Aptitude ? explain the benefits of Aptitude
अभिक्षमता किसे कहते हैं? अभिक्षमता के लाभ स्पष्ट करें।

उत्तर अभिक्षमता का अर्थ, मनुष्य की उन विशेषताओं का संयोग है, जो किसी विशेष क्षेत्र में समुचित प्रशिक्षण द्वारा पर्याप्त ज्ञान एवं कौशलों को अर्जित करने की कुछ विशिष्ट कौशलों को इंगित करता है। सामर्थ्य या योग्यता को प्राथमिक अभिक्षमता को उचित प्रमाणों में व्यापक प्रशिक्षण प्रदान विकसित करने के लिए निर्णय एवं कार्य निष्पादन में लाभ हो ताकि उचित निर्णय।

अभिक्षमता की निम्न विशेषताएं हैं-
- मानसिक सामर्थ्य का संकेत
- अर्जित भी - जन्मजात प्रकृति
- विशिष्ट क्षेत्र में कौशल सीखने की ताकत

अभिक्षमता के लाभ निम्न हैं -
1 मानसिक सामर्थ्य के प्रयोग से कार्यों के परिणाम का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।
आत्मिक सामर्थ्य का लाभ जिसमें व्यक्ति उद्देश्यों की उचित संगठन को नेतृत्व तथा प्रबन्धन एवं निर्णयों द्वारा प्रभावी तरीके से कौशलपूर्ण लक्ष्य को अनुसरण करना आवश्यक है।

आदर्श स्थिति में 'पूर्ण निरपेक्षता'
क्योंकि इस स्थिति में 'पूर्ण निरपेक्षता' मानव का
झुकाव, लगाव या दबाव किसी प्रकार का न
लगाव और व्यावहारिक में नहीं होता का कि-
महत्व एक कल्पना में 'पूर्णता' की प्राप्ति
बताया एक और को महत्व होगी।
भी सरकारों का नजरिया जैसा है तब भी सत्ता के
स्तर पर प्रशासनिक अधिकारियों की फेरबदल देखी
जाती है। इससे यह प्रदर्शित होता है कि-
राजनीतिक दलों एवं लोक सेवकों में एक जुड़ाव
पाया जाता है। अतः 'पूर्ण तटस्थता' नजर नहीं आती।
एक अन्य उदाहरण यह भी सामने प्रकट
होता है लोक सेवक - राजनीतिक गठजोड़ से
भ्रष्टाचार, साथ ही सेवा निवृत्ति के बाद लोक
सेवा - मध्यस्थता या रुझान। साथ ही साथ ही-
सलाहकार, अध्यक्षों एवं पदों पर नियुक्ति-
प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से 'पूर्ण तटस्थता' के
नियम के विपरीत दिखलाई पड़ती है।

निष्कर्षतः इन विवरणों से यह साबित हो-
जाता है कि लोक सेवाओं में 'पूर्ण तटस्थता'
एक कल्पना मात्र है। क्योंकि 'तटस्थ' न भी-
वर्णित किया है, 'इनमें से कोई लोग, पक्ष-
का स्वाद लिए बिना, नहीं रह सकते। हैं।
—॥—

4

Question 7 ... Absolute neutrality in public service is a hyp[illegible] ... [illegible]

भारतीय नागरिकों की लोक कल्याणकारी अवधारणा [illegible]
[illegible] की लक्ष्य प्राप्ति होती है
[illegible] और नागरिक के मध्य सेतु का
[illegible] आचरण स्वरूप के
[illegible] निष्पक्षता। के [illegible]
[illegible] किए [illegible] हो [illegible]
[illegible] किसी पर [illegible] पालन।
[illegible] नहीं [illegible] सेवाओं में पूर्ण-
[illegible] तटस्थता [illegible] लोक [illegible]
[illegible] एक कल्पना मात्र लगता है।
[illegible] तटस्थता, और पूर्ण तटस्थता में विभेद -
तटस्थता [illegible] कार्यों के निष्पादन
तटस्थता का तात्पर्य [illegible] तथा सरकार के प्रति
में अपनी मूल भावना [illegible]
नैतिक मूल्यों सिद्धांतों नियमों, लक्ष्यों के प्रति
समर्पण न होना।
लोक सेवकों का कर्तव्य है कि सरकारी नियमों
[illegible] एवं आदेशों का पालन करे बिना किसी
आलोचना या प्रलाप के। क्योंकि तटस्थता का
वास्तविक अर्थ ही किसी के प्रति आत्मीय
रखने की बात कर रहा है।
जबकि पूर्ण तटस्थता, एक चिर स्थायी स्थिति
को प्रदर्शित करती है।

प्रश्न (2.6) Continued (जारी)

6x10=60

प्र./M = 06

प्राप्तांक

- कार्मिक [illegible]

ज्ञान व कौशल [illegible] इस घटना में शीर्ष पद रूप प्रदा करना, नागरिक समाज को [illegible] ईमानदारी, समर्पण, कार्य के प्रति कर्तव्य बोध का मिश्रण था

प्रधान की भूमिका

प्रधान की भूमिका : भ्रष्टाचार नियंत्रण में-

- भ्रष्टाचार से उत्पन्न अवगुणों को [illegible] करे। प्रधान ने राष्ट्रीय हित को वरीयता दी
- स्वयं समाज में नैतिक गुणों का विकास कर भ्रष्टाचार को समाज से दूर करे।
- समूहों, संस्थाओं के द्वारा भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठायें।
- भ्रष्टाचार के विरुद्ध सर्वाधिक संख्या का [illegible] करे। भ्रष्टाचार को उजागर करने का प्रयास करे।
- साथ ही भ्रष्टाचारी को 'दण्ड' व सज्जनों को पुरस्कृत करने का प्रयास करे।
- भ्रष्टाचार सम्बन्धी नियमों, कानूनों का प्रचार करके जागरूकता बनाने का उपाय करे।

अतः यह कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार एक जटिल समस्या है किंतु समाज-परिवार में उच्च नैतिक गुणों के विकास से तथा [illegible] कानूनी प्रयास से इसे [illegible] करने में [illegible] साथ ही लोकतंत्र [illegible]

4

[illegible]

परिवार ... [illegible] ... की ... [illegible]

[illegible] → 1. संज्ञानात्मक स्तर
→ 2. भावनात्मक स्तर
→ 3. क्रियात्मक स्तर

— [illegible] की यथार्थ [illegible] 'डेकार्ड' [illegible]।
परिवार समाज की [illegible] प्रथम पाठशाला [illegible] चरित्र निर्माण की [illegible] होती है। अतः स्वस्थ परिवार से आदर्श [illegible] होती है। [illegible] का निर्माण कर [illegible] स्वस्थ समाज। [illegible]

1. संज्ञानात्मक स्तर : वस्तुओं, व्यक्तियों के प्रति [illegible] का विकास करना। [illegible] शुभ - अशुभ, उचित - अनुचित, सत्य - असत्य आदि गुणों से परिचित कराना शामिल है।

2. भावनात्मक स्तर : उन [illegible] में वस्तुओं, [illegible] के प्रति भावना, लगाव, जुड़ाव का भाव [illegible] करना ताकि उनका महत्त्व सुनिश्चित हो सके।

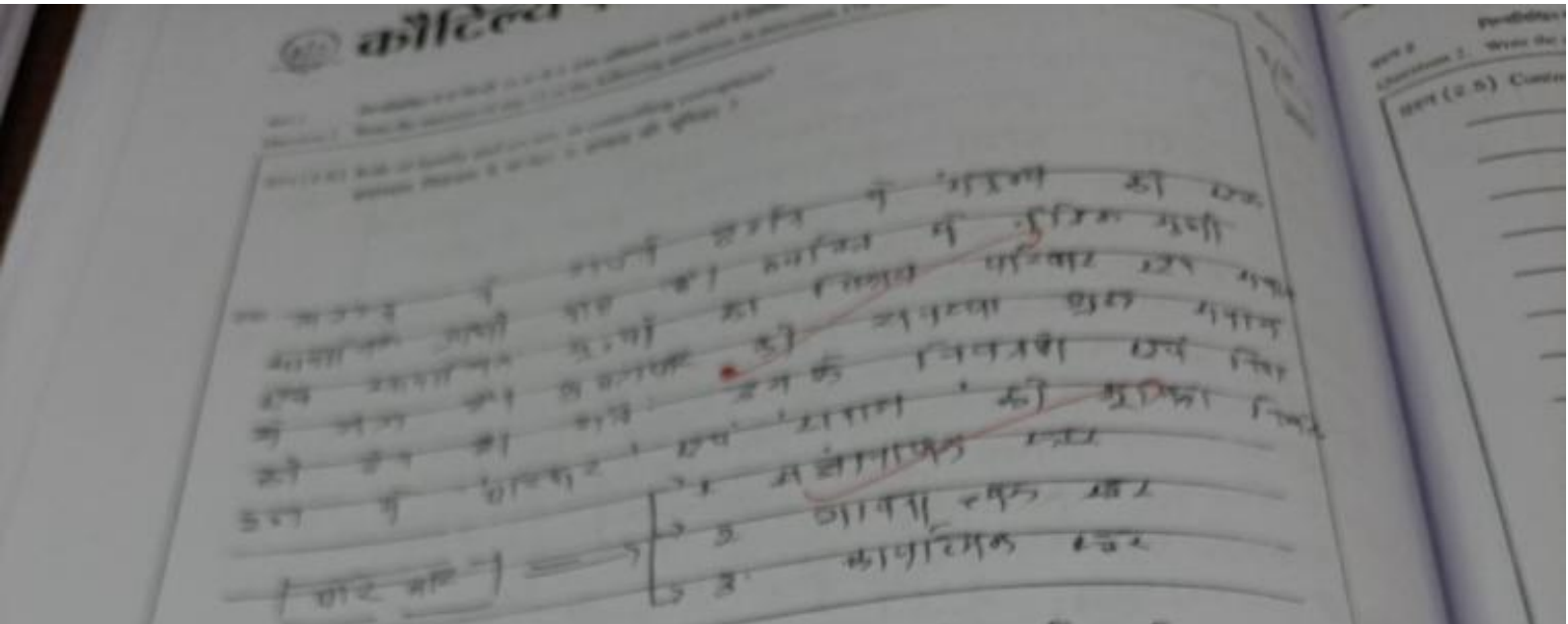

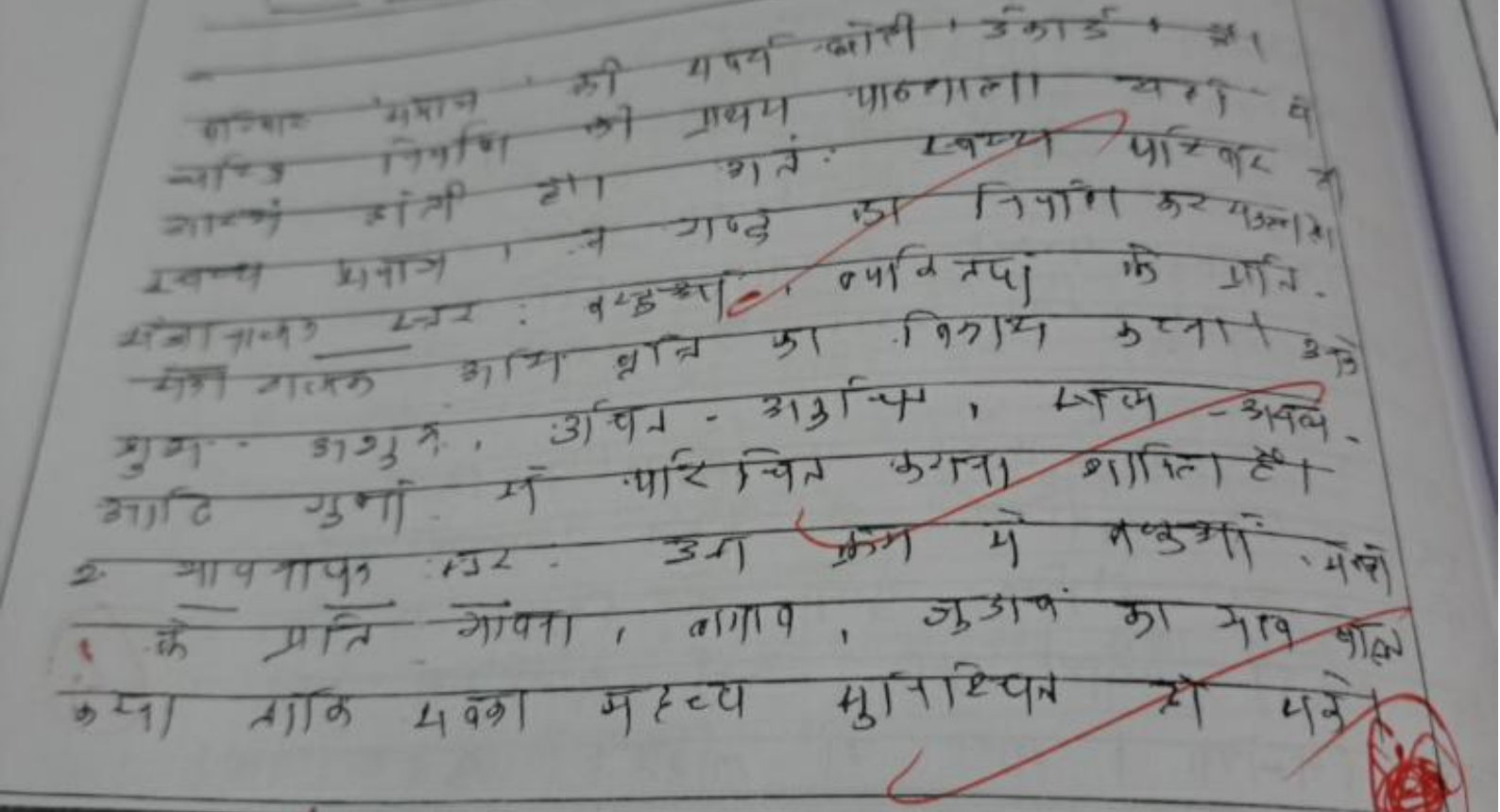

6x10=60

पू./M = 06
प्राप्तांक

# कौटिल्य एकेडमी



प्रश्न 1 कुल प्रश्न में 15 अतिलघुत्तरीय प्रश्न हैं, प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम 15 से 20 शब्दों में देना है। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न 03 (तीन) अंकों का है।

Question 1. This question contains 15 very short type subquestions. Answer each question in maximum 15 to 20 words. All question are compulsory. Each question carries 03 (Three) Marks.

3x15=45

प्रश्न (1.11) Importance of tolerance in public servants (लोकसेवक में सहिष्णुता का महत्व)

पू./M = 03
प्राप्तांक

उत्तर : [illegible]

प्रश्न (1.12) Honesty (ईमानदारी)

उत्तर :

पू./M = 03
प्राप्तांक

प्रश्न (1.13) Objectivity (वस्तुनिष्ठता)

उत्तर :

पू./M =
प्राप्तांक

प्रश्न (1.14) Inability (असमर्थता)

उत्तर :

प्रश्न (1.15) International Transparency Commission (अंतर्राष्ट्रीय पारदर्शिता आयोग)

उत्तर :

# कौटिल्य ए…

प्रश्न 1 इस प्रश्न में 15 अतिलघूत्तरीय उप प्रश्न हैं, प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम 15 से 20 … प्रत्येक प्रश्न 01 (तीन) अंकों का है।
Question 1 This question contains 15 very short type subquestions. Answer each question in max… All questions are compulsory. Each question carries 03 (Three) Marks

प्रश्न (1.6) Compassion fatigue (करुणा की थकान)

उत्तर : करुणा की कमी से व्यक्ति पीड़ितों की करुणा के भाव जागृत एवं निराशा के प्रति निष्क्रिय भावना का होना।

(1)

प्रश्न (1.7) Ethical dilemma (नैतिक दुविधा)

उत्तर : नैतिक दुविधा से आशय - ऐसी परिस्थिति जिसमें - निर्णयन में दो या अधिक नैतिक विकल्पों में चयन करना होता हो। निर्णय कर्ता - अपने मूल्य, की स्थिति में - ऐसा नैतिक विकल्पों में उचित मार्ग - को चुनना।

(2)

नैतिक ... 

प्रश्न (1.8) Political Dairy (पॉलिटिकल डायरी)

उत्तर : पं. दीन दयाल उपाध्याय की रचना - पोलिटिकल डायरी
- प्रवर्तक - एकात्म मानववाद; जनसंघ के संस्थापक
- समर्थक - अन्त्योदय, सर्वोदय

(2)

प्रश्न (1.9) Sympathy (सहानुभूति)

उत्तर : सहानुभूति - किसी के दुःख को महसूस करने की योग्यता को।

(1)

प्रश्न (1.10) The life devine (द लाइफ डिवाइन)

उत्तर :

द लाइफ डिवाइन, लेखक श्री अरबिन्दो ...

अरविन्द घोष

इस प्रश्न में 15 अतिलघुउत्तरीय उप प्रश्न है, प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम 15 से 20 शब्दों में देना है। सभी प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न 03 (तीन) अंकों का है।
This question contains 15 very short type subquestions. Answer each question in maximum 15 to 20 words. All question are compulsory. Each question carries 03 (Three) Marks. 3x15=45

प्रश्न (1.1) Hot hand phenomenon (गर्म हाथ परिघटना) प्र./M = 03

उत्तर: गर्म हाथ परिघटना – एक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह जहाँ – सफल परिणामों के अनुभवी व्यक्ति को आगामी प्रयासों में सफल होने की अधिक संभावना का भ्रम।

प्रश्न (1.2) Nolan committee (नोलन कमेटी) प्र./M = 03

उत्तर: नोलन समिति – सार्वजनिक जीवन के सात सिद्धांत 1) निःस्वार्थता; 2) सत्यनिष्ठा; 3) वस्तुनिष्ठता; 4) जवाबदेही; 5) खुलापन; 6) ईमानदारी; 7) नेतृत्व।
उद्देश्य – लोक सेवकों के मार्गदर्शन हेतु।

प्रश्न (1.3) Psychological work of mentality (मनोवृत्ति का ज्ञानात्मक कार्य) प्र./M = 03

उत्तर: मनोवृत्ति का ज्ञानात्मक कार्य – किसी वस्तु / विषय के बारे में पूर्व में उपलब्ध ज्ञान के आधार पर सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति का निर्माण होना।

प्रश्न (1.4) four nobel truth (चार आर्य सत्य) प्र./M = 03

उत्तर: चार आर्य सत्य – संबंध – बौद्ध धर्म।
1. दुःख 2. दुःख समुदाय
3. दुःख निरोध 4. दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा

प्रश्न (1.5) Cleanliness means (शुचिता से आशय) प्र./M = 03

उत्तर: शुचिता (Probity) से तात्पर्य सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पारदर्शिता से है, जो प्रशासनिक कार्य कलापों में लोक सेवकों के प्रति जनता का विश्वास बढ़ाती है।

वर्णनात्मक उत्तर पुस्तिका
Single Question Answer Booklet

MAINS TEST PAPER - 4 / PAGE - 1

3066666

Paper Code
GS Paper-IV

Date : 06-03-2021

रोल नंबर अंतर्राष्ट्रीय अंको में लिखें – (1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 0)

रोल नंबर शब्दों में लिखें –

नाम – Harivansh

अभ्यर्थी द्वारा सावधानीपूर्वक भरा जावें।

Roll No.

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ⓪ | ⓪ | ⓪ | ⓪ | ⓪ | ⓪ |
| ① | ① | ① | ① | ① | ① |
| ② | ② | ② | ② | ② | ② |
| ③ | ③ | ③ | ③ | ③ | ③ |
| ④ | ④ | ④ | ④ | ④ | ④ |
| ⑤ | ⑤ | ⑤ | ⑤ | ⑤ | ⑤ |
| ⑥ | ⑥ | ⑥ | ⑥ | ⑥ | ⑥ |
| ⑦ | ⑦ | ⑦ | ⑦ | ⑦ | ⑦ |
| ⑧ | ⑧ | ⑧ | ⑧ | ⑧ | ⑧ |
| ⑨ | ⑨ | ⑨ | ⑨ | ⑨ | ⑨ |

अभ्यर्थी के अनुक्रमांक एवं पहचान पत्र को प्रवेश पत्र से मिलान पश्चात् ही वीक्षक बॉक्स मे हस्ताक्षर करें

वीक्षक द्वारा भरा जावे।

यदि अभ्यर्थी अनुचित साधन का उपयोग करते हुए पाया जाता है तो वीक्षक निम्नांकित गोले को काले/नीले पेन से भरे एवं तत्काल केन्द्राध्यक्ष को सूचित करें :

○

(केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर एवं सील परीक्षा भवन में)

Phone No. 0731-4226615, 4266821 *Mob.* 98939 29541, 94250 68

Paper Code
GS Paper-IV

3066666

...aacademy.com